International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 04-02-2019; Accepted: 06-03-2019
www.hindijournal.com
Volume 5; Issue 3; May 2019; Page No. 04-06

समकालीन दलित कहानी में प्रतिरोध का स्वरूप

रहीम मियां
सहायक प्रोफेसर, बानारहाट कार्तिक उरांव हिंदी गवर्नमेंट कॉलेज, बानारहाट, जलपाईगुड़ी

प्रस्तावना

भारतीय वर्ण व्यवस्था में जो चौथे स्थान पर शूद्र जातियां थी, उन्हें हजारों वर्षों से दुर्दशा ग्रस्त जीवन यापन करना पड़ा था। इस जातीयता और वर्ण व्यवस्था के खिलाफ जो जन आंदोलन चल पड़ा था, वही दलित आंदोलन कहलाया। दलित साहित्य इसी दलित जातियों की व्यथा एवं उत्पीड़न की दास्तान है जिसकी शुरुआत मराठी भाषा में हुआ। हिंदी में दलित लेखक बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में आए, दलित लेखकों ने सवर्णों के जाति व्यवस्था के अभिशाप के विरुद्ध लेखन किया। राम निहोर विमल लिखते हैं– "किंतु शिक्षित हो जाने के बाद दलित साहित्य की सुरक्षित मांद में घुसकर भी द्विजों की शोषक उत्पीड़न धनात्मक प्रवृत्तियों को नंगा कर दे रहे हैं और इसके साथ ही इन द्विज प्रवृत्तियों के छिपने की कोई सुरक्षित या गुह्यजगह नहीं रह पाती। इसीलिए भगदड़ और बिलबिलाहट है। यही दलित साहित्य का विरोध भी है।" डॉ आंबेडकर, ज्योति राव फुले, रामास्वामी नायकर ने इस आंदोलन को सैद्धांतिक आधार प्रदान किया और इस वर्ग को अंधकार से रोशनी में लाने का जिम्मा उठाया एवं उसके अस्तित्व की लड़ाई लड़ी। यही कारण है कि आज दलित साहित्य विश्व स्तर पर अपनी पहचान बना रहा है। डॉ कंवल भारती लिखते हैं- " दलित साहित्य से अभिप्राय उस साहित्य से है जिसमें दलितों ने स्वयं अपनी पीड़ा को रूपायित किया है, अपने जीवन संघर्ष में जिस यथार्थ को भोगा है, दलित साहित्य उनका, उसी की अभिव्यक्ति का साहित्य है ।यह कला के लिए कला का नहीं, बल्कि जीवन का और जीवन की जिजीविषा का साहित्य है।" इन्होंने जहां दलित साहित्य को स्वानुभूति का साहित्य माना, वहीं माता प्रसाद गुप्त ने सहानुभूति से लिखा साहित्य को भी दलित साहित्य माने जाने की बात कही है। वे कहते हैं– "दलित साहित्य केवल दलितों का लेखन नहीं है, बल्कि जिन्होंने भी दलितों की पीड़ा का अनुभव करके उन पर साहित्य सृजन किया है, वह भी दलित साहित्य की श्रेणी में आता है।"

दलित साहित्य की शुरुआत आत्मकथा से हुई है, किंतु आज उपन्यास, कहानी, कविता में भी दलित लेखन हो रहा है। जहां तक कहानी विद्या का सवाल है, समकालीन दलित कहानी में वर्णाश्रम व्यवस्था से मुक्ति ही नहीं, आधुनिक मूल्यों की वकालत और अपने स्वतंत्र अस्तित्व की स्थापना का प्रयास भी चल रहा है। इसके केंद्र में मानवीय संवेदना ही है। यह ऐसा साहित्य है जिसमें मानव द्वारा मानव पर किए गए अथाह शोषण और अनाचार का प्रतिकार है। 'रमणिका गुप्ता' लिखती हैं- "जनवादी, प्रगतिवादी साहित्य की तरह ही दलित साहित्य भी दरअसल मानसिकता बदलने वाला साहित्य है। यह समाज की गलतियों को चिन्हित करने का और बदलने का साहित्य है। यह मानव - मानव की बराबरी और न्याय की मांग करने वाला, सामाजिक दमन के विरुद्ध तर्क करने वाला, विज्ञान पर आधारित विद्रोह का प्रतिबंध नायक है। हिंदी में सवर्ण लेखक यह मानते आए हैं कि दलित लेखन कुछ होता ही नहीं है जिसकी ओर ध्यान दिया जाए।" अमेरिकी साहित्य में भी श्वेत और अश्वेत का भेद इसी आधार पर है। रचनाकार 'रेल्फ़ एलिसन' अपने उपन्यास "द इनविजिबल मैन" में लिखते हैं- " मैं अदृश्य मनुष्य हूँ। किसी जादुई अर्थ में नहीं, मैं एक अश्वेत व्यक्ति हूँ और यही वजह है कि कोई मेरी उपस्थिति को देखता ही नहीं। लोगों के लिए मैं होता ही नहीं हूँ।"

समकालीन दलित कहानियों में दलित केवल सवर्णों द्वारा शोषित एवं पीड़ित नहीं दिखाई गई है, बल्कि दलितों के अंदर भी जातिगत भेदभाव के कारण दलित द्वारा ही दलितों का शोषण भी मुखर हुआ है। रमणिका गुप्ता की कहानी 'दाग दिया सच' दलित जीवन पर घटित अमानवीयताकी दर्दनाक कहानी है, जहां जातीय उन्माद की भीड़ ने एक चमार लड़के को अपने से उच्च कुर्मी लड़की से प्रेम विवाह करने के आरोप में पत्थरों से कुच - कुच कर मार दिया जाता है। चमार का लड़का, कुर्मी लड़की से शादी करें यह कुर्मी समाज सह नहीं पाता। ''कुर्मी महतो की लड़की और साला चमार का लड़का उससे आंख लड़ाता है यह हिम्मत उसकी।" जाति व्यवस्था का विरोध करते हुए मालती की मां कहती भी है- "ई तो अपने को राजपूत बाभन के बाप समझत है। उन्हीं की नकल कर रहे हैं। ओही रकम दहेज मांग रहे हैं। आजकल कौन माने हैं जात -पात? कैसे पढ़े लिखे लड़कवन है ईसब? पढ़ लिख कर तो जात -पात टूटे के चाही, ई त बढ़ गैल है।" लेखिका इस क्रूर समाज के फैसले पर व्यंग्य करती हुई कहती है- " पत्थरों से कुचने वाला उस रात नायक था पूरी जमात का। वीर योद्धा एक निहत्थे को मार कर, एक बंधे हुए को कुचलकर फुले न समा रहे थे। इज्जत बच गई थी उनकी, उनके समाज की और उनके औरत की।"

दलित साहित्यकारों का प्रेमचंद जी से यह शिकायत रहा है कि उन्होंने दलितों को हमेशा शोषित एवं पीड़ित ही दिखाया है। प्रेमचंद के यहां दलित सबल नजर नहीं आते किंतु, समकालीन दलित कहानियों में भी दलित लेखकों ने दलितों को शोषित एवं पीड़ित ही दिखाते हैं। इन पात्रों के प्रतिरोध का स्वर अत्यंत धीमा है। 'जीवनसाथी' कहानी में नायक अपनी पत्नी की मौत का बदला लेते हुए कांस्टेबल को मार तो देता है लेकिन, सामाजिक व्यवस्था से लड़ नहीं पाता और आत्महत्या कर लेता है।– "मैंने सोचा कुत्ते की मौत मरने से अच्छा है, आत्महत्या कर लूं। इसके सिवा मेरे पास कोई चारा नहीं था।" 'अस्मिता लहू-लुहान' कहानी में भी नायक जो देवी- देवता का उपासक है, यह जानकर कि श्यामाबाई के वैश्या बनने और उसके बाप न बनने के पीछे, ईश्वर का ही हाथ है। वह पूजा घर को खंडहर बना देता है। लेखक लिखते हैं- "ललिता ने अपने पति की बातों को सुना तो सन्न रह गई। उसकी सांस अटक गई तभी चंदर ने ललिता को चित्रों का बंडल देकर कहा- आओ इसमें सलाई मार दे।" 'उसका फैसला' कहानी में दलित नारी बिंदो को अपने ही समाज से शोषित होना पड़ता है। उसके ससुर

उसके साथ बलात्कार करता है और चमारों के प्रधान इस निर्णय पर पहुंचते हैं कि बिंदो बदचलन है। वह पंचायत का विरोध नहीं कर पाती है और कुएं में डूब कर आत्महत्या कर लेती है।– "बिंदो ने एक झटके से अपना हाथ छुड़ाया और चबूतरे वाले कुएं की ओर को भागने लगी। 'अब कहां भागती है साली, तेरा फैसला तो होकर रहेगा' कहकर चंदर उसे पकड़ने के लिए उसके पीछे दौड़ा। लेकिन इससे पहले कि चंदर उसको पकड़ पाता, उसने कुएं में छलांग लगा दी। सारी पंचायत आवाक् देखती रह गई।"

ओमप्रकाश वाल्मीकि रचित कहानी "शव यात्रा" चमारों द्वारा बल्हार जाति पर किए गए अत्याचार की कहानी है। बलहार जाति अछूतों में भी अछूत जाति है। बलहार के लिए चमार मानो ब्राह्मण है। चमारों के गांव में बल्हार का पक्का मकान बनेगा यह प्रधान कैसे सहे? वह कहता है- "अंटी चार पैसा आ गए तो अपनी औकात भूल गया। बल्हारों को यहां इसलिए नहीं बसाया था कि हमारी छाती पर हवेली खड़ी करेंगे। वह जमीन जिस पर तुम रहते हो, हमारे बाप दादों की है। जिस हाल में हो..... रहते रहो..... किसी को एतराज नहीं होगा। सिर उठाकर खड़ा होने की कोशिश करोगे तो गांव से बाहर कर देंगे।" सलोनी को बुखार होने पर डॉक्टर तक घर जाने से मना कर देते हैं। चमार अपनी बैलगाड़ी तक नहीं देते हैं। अमानवीयता की हद तब पार कर जाती है जब सलोनी की लाश को हाथ देने गांव से कोई नहीं आता है। कल्लन को दलितों की मुक्ति के सारे भाषण याद आने लगते हैं- " रेलवे कॉलोनी में अंबेडकर जयंती के भाषण उसे याद आने लगे थे, उसने उन तमाम विचारों को झटक दिया था, गहरी वितृष्णा उसके भीतर उठ रही थी, उसे लगा वे तमाम भाषण खोखले और बेहद बनावटी थे।" ऐसी स्थिति को याद करते हुए ही राजेंद्र यादव जी ने कहा है- " दलित साहित्यकारों की यह मजबूरी है कि वह सिर्फ अपने निजी अनुभव को जमीन पर जीने के संघर्षों और स्थितियों का इंदराज करें। हां सबसे निचली गहराइयों से उछल- उछल कर आने वाली यह तस्वीरे इतनी खौफनाक है कि सारे समाज को दहला कर रख देती है।"

'बदबू 'कहानी में सूरजपाल चौहान दिखाते हैं कि जहां संतोष को जो नारकीय जीवन बिताना पड़ता है, उसका जिम्मेदार खुद उसके पिता और उसके ससुराल वाले हैं जो दलित हैं और अपनी जातिगत पेशे को ही अपनी नियति मानते हैं। मैट्रिक में 70% अव्वल नंबर पाकर भी उसे आगे पढ़ने नहीं दिया जाता। न चाहते हुए भी उसकी शादी शहर की गंदी बस्ती में कर दिया जाता है जहां शहर का मल - मूत्र उठाना ही उसकी जाति का पेशा है। संतोष को भी उसी नारकीय कार्य को करना पड़ता है। कहानी में हम देखते हैं –"संतोष सुबह से भूखी थी। रोटी को देखते ही भूख और तेज हो गई। संतोष जैसे ही कौर तोड़ कर मुँह की ओर ले जाने लगी कि तभी उंगलियों में दबा हुआ निवाला उसे पखाने जैसा लगा.....संतोष की हालत ऐसी हो गई थी कि उसे घर में रखी हर एक वस्तु मल - मूत्र से भरा टोकरा ही नजर आती।"

आखिर कब तक दलित साहित्यकार दलितों को शोषण में मरते दिखाते रहेंगे? दलित पात्र कब तक आत्महत्या का रास्ता चुनता रहेगा? दलित साहित्य से दलितों का कहाँ तक उपकार होगा? यह चर्चा का विषय बना हुआ है। इस पर प्रकाश डालते हुए भवानी सिंह लिखते हैं –"जहां तक दलित साहित्य की सार्थकता का सवाल है, जिनके घाव पर मरहम लगाने का दावा आज दलित साहित्यकार कर रहा है, उन तक न तो इस साहित्य की पहुँच ही है, न ही उनमें इन्हें समझने की समझ। वैसे भी साहित्य किसी समाज को एक 'दृष्टि' ही दे सकता है, 'दिशा' ही दिखा सकता है। 'दशा' तो स्वयं समाज को ही सुधारनी होगी।" ऐसा नहीं है कि दलित कहानी के सभी पात्र दुर्बल ही है। ऐसी कई कहानियां है जिनके पात्रों के प्रतिकार का स्वरूप भयानक है। 'अब नहीं नाचब' कहानी में सवर्ण समाज के खिलाफ पूरा दलित समाज का विद्रोह उभर कर आया है। दलित सामाजिक व्यवस्था को उलट देना चाहते हैं। कहानी में हम देखते हैं –"मेहनत से सारी चीजें तो, हम आज भी पैदा करते हैं, किंतु आज, हम, इन चीजों के मालिक नहीं है, आगे, इसके लिए हमें लड़ना होगा। लड़कर के, मेहनत न करने वाले, इन मालिकों को जीतकर ही, हमें मालिक बनना पड़ेगा।" 'आतंक' कहानी में जहाँ एक ओर दलित नारी को ठाकुर द्वारा सामूहिक बलात्कार करके मिट्टी का तेल डालकर जिंदा जला देते हैं। तो इसी कहानी में दूसरी ओर विमला के साथ भी ऐसा ही शोषण करना चाहते हैं। तब विमला चुप नहीं बैठती है और वह बॉडीगार्ड का रिवाल्वर छीन कर छ: - सात को मौत के घाट उतार देती है और अपनी देवरानी राखी की मौत का बदला ले लेती है।- "विमला ने अपने जुल्म का बदला सात लोगों को खत्म करके ले लिया। विमला अपनी राखी के बारे में सोच रही थी, तभी उसके मन में एक महामानव का ख्याल एवं उनके विचार आए। सोचने लगी कि किसी ने ठीक ही कहा था कि -'जुल्म करने वालों से जुल्म सहने वाला ज्यादा गुनहगार होता है।" 'रतन वर्मा' द्वारा लिखित कहानी 'बलात्कारी' में भी बिल्टुआ ठाकुर से बदला लेने के लिए बलात्कारी बन जाता है। दलित होने के कारण बिल्टूआ को हाई स्कूल में एडमिशन नहीं मिला था। वह बचपन में ही अपनी मां को ठाकुर द्वारा लूटते हुए कई बार देख चुका था। बाद में उसकी मंगेतर सनेही की इज्जत भी ठाकुर द्वारा लूट ली जाती है। इसका बदला बिल्टुआ पहले तो ठाकुर की बहू की इज्जत लूट कर लेता है, किंतु उसे सजा डकैती के झूठे आरोप में मिलता है। और अंत में सनेही की मौत के बाद वह ठाकुर की बेटी की इज्जत, उसकी शादी के दिन ही लूट कर, प्रतिशोध की आग को ठंडा करता है। वह कहता है- "लीजिए इसके संग ही बेटा का रिश्ता करने आए हैं न आप लोग तो कीजिए रिश्ता। पर अब है क्या इसके पास? जो था सो हम लूट लिए। का बूझते हैं ठाकुर सब? सिरफ ये ही हमारी सनेही की इज्जत लूट सकते हैं। ई काम तो हम 'छोटकन' भी कर सकते हैं।"

दलित कहानियों में प्रतिरोध का स्वर सामाजिक उत्पीड़न से शुरू हुआ था, किंतु आज दलित समाज खुद दलित वाद के घेरे में घिरता जा रहा है। 'गंगा सहाय मीणा' का कहना है –''आज दलित साहित्य में अनुभूति की प्रमाणिकता से ज्यादा जरूरी है- अभिव्यक्ति की प्रमाणिकता। आज दलित को ब्राह्मण और ब्राह्मणवाद से बाहर आना होगा। जब तक दलित वर्ग अन्य पीड़ित समुदायों की समस्याओं से उद्वेलित नहीं होंगे तब तक न तो समाज संगठित हो पाएगा और न दलित साहित्य को नई दिशा मिलेगी।" दलित कहानी ही नहीं, दलित साहित्य की नींव है-'अंबेडकर के विचार'। पर आज का दलित साहित्य जाति व्यवस्था के विरुद्ध जो अंबेडकर के विचार है, उसे भूल कर आगे बढ़ रहे हैं। बुद्ध शरण हंस कहते हैं– "आज जरूरत इस बात की है कि ज्योतिराव फुले, बाबा साहेब आंबेडकर के साहित्य को घर- घर पहुँचाने का मिशन साहित्यकार पूरा करें ताकि भारत के लोग भारतीय बन सके, इंसान कहला सके, न कि हिंदू, मुसलमान या ब्राह्मण, अब्राह्मण।" अभिव्यक्ति की प्रमाणिकता के आधार पर 'जितेंद्र श्रीवास्तव' जी ने प्रेमचंद को दलितों का हितैषी बताया। किंतु उनके यहाँ 'दलित' शब्द के स्थान पर 'हरिजन' शब्द मिलता है, तो इनके विरोध में दलित लेखक 'ओमप्रकाश वाल्मीकि' ने प्रेमचंद को दलित साहित्य की कोटि से ही बाहर रखा। उनका कहना है कि- '' प्रेमचंद की कहानी को एक दलित की नजरिए से पढ़ें, एक चमार की नजरिए से पढ़ें, तो आपको उसमें दिखाई देगा कि प्रेमचंद ने हमेशा कायस्थ के नजरिए से ही कहानियों को लिखा है, दलित के नजरिए से नहीं।"

इस प्रकार समकालीन दलित कहानियों में सवर्ण बुद्धिजीवियों के वैचारिक

निर्माण ध्वस्त हो रहे हैं। दलित लेखकों के प्रतिरोध का स्वर अब काफी उग्र होने लगा है। अब केवल लेखनी ही नहीं, अपनी पीड़ा एवं विचारों को संप्रेषित कर सामाजिक चेतना जगाने का काम कर रहे हैं। 'मुद्राराक्षस' के शब्दों में कहें तो–"इन कथा रचनाओं में मात्र यथार्थ नहीं है। उनकी कृतियां यथार्थ की शल्यक्रिया भी करती है। लेकिन इस सामाजिक शल्यक्रिया के बावजूद दलित रचनाकार की समस्याएं जीवन में ही नहीं, साहित्य की दुनिया में पहले से ज्यादा जटिल और लगभग हिंसक हो गई है।"

संदर्भ

1. दलित चेतना साहित्य एवं सामाजिक सरोकार- page 34, समीक्षा पब्लिकेशन- रमणिका गुप्ता।
2. दलित साहित्य दशा और दिशा- माता प्रसाद गुप्त, पेज- 149
3. दलित साहित्य की भूमिका- डॉ कमल भारती।
4. हिंदी दलित साहित्य का इतिहास और विकास- डॉ श्रीमती तारा सिंह-ब्लॉग
5. 'जमाने की रफ्तार' न्यूज़18/03/2012
6. शोधगंगा- तृतीय अध्याय- दलित चेतना और भारतीय साहित्य।
7. नई सदी की पहचान:श्रेष्ठ दलित कहानियां।संपादक - मुद्रा राक्षस- लोकभारती प्रकाशन।
8. कहानी -शव यात्रा-ओमप्रकाश वाल्मीकि।
9. कहानी- अब नहीं नाचब-राम निहोर विमल।
10. कहानी- जीवन- साथी- प्रेम कपाड़िया।
11. कहानी - दाग दिया सच- रमणिका गुप्ता।
12. कहानी-अस्मिता लहूलुहान - बुद्ध शरण हंस।
13. कहानी- आतंक- कवि राजेश कुमार बौद्ध।
14. कहानी - उसका फैसला- कालीचरण प्रेमी।
15. कहानी – बदबू- सूरजपाल चौहान।
16. कहानी- बलात्कारी -रतन वर्मा।